

DR. RAMACHANDRAN NAGASWAMY

Dr. Ramachandran Nagaswamy is an acknowledged International expert in Indian Art, and is considered as Toremost authority on Chola Bronzes.Dr. Nagaswamy's articles have been published in 23 languages of the world by the UNESCO in its journal. He is a multi faceted personality specializing in ancient Epigraphs, art, architecture, Sculpture Bronzes, Paintings, Numismatics, Religion and Philosophy, Temple rituals and Music and Dance and South East Asian Art. He travelled extensively both in the West and East like America, Austria, Germany, Switzerland Denmark, Sweden, France, Italy, Greece UK USA, Canada, Thailand, Cambodia Malaysia, Singapore, Sri Lanka and Bangladesh, he has given lectures on Indian art and cuiture in all the leading Universities and Museums. He is the first to undertake under water Archaeological survey, off the Cholamandal coast from Nagappattinam in the south to Poompuhar, in collaboration with Oceanographic Survey of India. He was the first to initiate the Sound and light program at the Thirumalai Nayak Mahal Madurai.

2. Born on August 10, 1930, Dr.Nagaswamy obtained his Masters Degree in Sanskrit language and Literature, from Madras University, and PhD degree from Deccan College Poona and Training in Archaeology and conservation under Archaeological Survey of India. He was a member of the National Art Purchase Committee, and is now the member of Many Central government Committees. He served as advisor to Govt. of India for Documentation of Cultural Property, Thanjavaur under UNESCO project, under the IGNCA. Dr. Nagaswamy started his carrier as Curator for Archaeology at the Government museum Madras, in 1959 he was transferred to the State Department of Archaeology in 1963 and appointed as the first Director of Archaeology of Tamilnadu in 1966 and served in the capacity for 22 years. He established the State Department of Archaeology on a firm footing with several sections, has established eleven site museums. He was also instrumental in protecting the birth place of National Poet, Subramanya Bharati at Ettyapuram,

3. Dr.Nagaswamy served as a visiting Professor in Jawaharlal Nehru University on History and Epigraphy and Fine Arts. He served as the first Vice Chancellor of the Kanchipuram University— Sri Chandra Sekharendra Saraswati Vishwa Mahavidyalaya. Now he is serving as the National Guru by ICHR under National Gurukul Fellowship 2017-19.

4. Greatest contribution to the history of Indian Art is his appearance in the London High Court as an Expert Witness, on behalf of Government of India, in the London / Pattur Nataraj a case, and proving the provenance, date and other matters relating to history and Temple culture, that enabled India to win the Nataraja back to Tamilnadu. The Trial Judge of the London High court in his judgment has paid tributes to Dr. Nagaswamy by sayina that "Nagaswamy, I am satisfied is an unequalled expert in his subject". Three Senior Judges of the Appeal Court concurred with the judgment of the Lower Court and remarked that there was considerable body of evidence to establish stylistic similarities led from Dr. Nagaswamy an expert Archaeologist and devout Hindu, Justice Ian Kennedy not only analyzed and considered in detail and in the final result preferred the opinion of Dr. Nagaswamy. A finding of this sort is almost unappealable". Mr. AdrianHamilton, the Queen's Council, in his submission to the London Court mentioned that Dr. Nagaswamy has brought to bear unequalled learning and experience in the historical, cultural and religious aspects and the Hindu Religion.

5. Dr.Nagaswamy appeared in Rama Janma Bhumi/Babri Masjid Demolition Case and gave evidence for 26 full days in the court proving that there did exist Hindu Temple beneath the Demolished Babri Masjid confirming the Rama Janma Bhumi Claim based on the excavation conducted by the Archaeological Survey of India. Dr. Nagaswamy conducted comparative and microscopic examination of images of Nataraja stolen from Tamilnadu and smuggled to Australia and issued the identity certificate at the request of the IDOL Wing CID, Tamilnadu Police which clinched the case and facilitated the return of the IDOL and handing over to Honourable Prime Minister of India by Honourable Prime Minister of Australia.

6. Dr. Nagaswamy also founded the now world famous Natyanjali Dance festival with Dr. Kapila Varsyayana, 30 years ago at Chidambaram. He himself has composed over twelve Dance dramas, and presented them in many countries as at the British museum London and other parts of the world. Through innovative methods he carried the message of Archaeology to rural areas of the State and awarded the title. 'Sila Lechya Tativajna by Mahaswami of Kanchi. All leading Cultural organizations in Tamilnadu have honored him with Appreciations.Tamilnadu government conferred on him the title Kalaimamani. The MAM Charities awarded the MA Chidatnabram chettiyar Award and cash price of One lakh of Rupees. Pollachi Vallal N. Mahalingam confered the title "Silai miitta chemmal" i.e. the retriever of Nataraja". Other honours are by The Royal Asiatic Society of Mumbai, Fellow of the Royal Asiatic Society Fellow of the Bengal Art by Bangladesh, Fellow of the Bharati sangam of Houston, USA, Tamil Sangam, Canada, Bharati sangam, Chennai, Madras Samskrita Academy Ramakrishna Mission, TN Archaeological Society, South Indian Numismatic Society, Sekkilar Research Centre, Chennai, Sekkilar Reasearch Centre at Chidamabaram, Arsha Vidya Gurukulam of Pujya Sri Dayananda Saraswati.



डॉ. रामचन्द्रन नागस्वामि

डॉ. रामचन्द्रन नागस्वामि भारतीय कला जगत में एक जाने माने अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ हैं और आपको चोला ब्रांजेज के टोरमोस्ट हस्ती के रूप में माना जाता है। यूनेस्को द्वारा अपने जर्नल में आपके लेखों को विश्व की 23 भाषाओं में प्रकाशित किया गया है। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं तथा आपको प्राचीन शिलालेखों, कला, वास्तुशास्त्र, मूर्ति, शिल्प-कांस्य युग, पेंटिग्स, मुद्राशास्त्र, धर्म एवं दर्शन,मंदिर के रीति-रिवाज तथा संगीत एंव नृत्य और दक्षिण पूर्व एशियाई कला में महारत हासिल है। आपने पश्चिमी तथा पूर्वी दोनों देशों जैसे - अमेरिका, आस्ट्रिया, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, डेनमार्क, स्वीडन, फ्रांस, इटली, ग्रीस, यू.के., यू एस ए, कनाडा, थाइलैंड, कम्बोडिया मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका और बंगलादेश की गहन यात्राएं की हैं तथा आपने सभी अग्रणी विश्वविद्यालयों और संग्रहालयों में भारतीय कला पर व्याख्यान दिए हैं। आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने भारतीय समुद्र विज्ञान सर्वेक्षण के सहयोगसे दक्षिण में नागापट्टिनम से पूम्पुहार तक चोलामण्डल तट का जल के अंदर पुरातत्वीयसर्वेक्षण संपन्न किया है। आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने तिरूमलाई नायक महल मदुरै में ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रमकी शुरूआत की।

2. आपका जन्म 10 अगस्त, 1930 को हुआ था। आपने मद्रास विश्वविद्यालय से संस्कृत भाषा एवं साहित्य में अपनी परास्नातक उपाधि अर्जित की तथा डेक्कन कॉलेज, पूना से पी एच डी की उपाधि प्राप्त की और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत पुरातत्व विज्ञान एवं संरक्षण का प्रशिक्षण लिया। आप राष्ट्रीय कला क्रय समिति के एक सदस्य थे और अब कई केन्द्रीय सरकार की समितियों के सदस्य हैं। आपने आई जी एन सी ए के तहत, यूनेस्को के अंतर्गत सांस्कृतिक संपत्ति, तंजाउर के डाक्यूमेंटेशन के लिए भारत सरकार के सलाहकार के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। आपने वर्ष 1959 में राजकीय संग्रहालय, मद्रास में पुरातत्व के क्यूरेटर के रूप में अपना करिअॅर शुरू किया और वर्ष 1963 में आपका स्टेट डिपार्टमेंट ऑव ऑर्कियोलोजी में स्थानांतरण हो गया तथा वर्ष 1966 में तमिलनाडु पुरातत्व के पहले निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया और आपने 22 वर्षों तक इस पद पर सेवा की। आपने कई अनुभागों के साथ एक दृढ़ आधार पर स्टेट डिपार्टमेंट ऑव आर्कियोलोजी की स्थापना की और 11 साइट संग्रहालयों की स्थापना की। आपने एट्टायपुरम में, राष्ट्रीय कवि, सुब्रमण्य भारती के जन्म-स्थान को संरक्षित करने में भी मुख्य भूमिका निभाई।

3. आपने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में इतिहास एवं पुरालेख और ललित कलाओं पर एक अतिथि प्रोफेसर के रूप में सेवाएं प्रदान की। आपने कांचीपुरम विश्वविद्यालय - श्री चन्द्र शेषरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में अपनी सेवाएं दी। वर्तमान में आप राष्ट्रीय गुरूकुल फेलोशिप, 2017-19 के अंतर्गत आई सी एच आर द्वारा राष्ट्रीयगुरू के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

4. भारतीय कला के इतिहास में आपका महानतम योगदान, पत्तूर नटराज के एक मामले में, लंदन में भारत सरकार की ओर से एक विशेषज्ञ साक्षी के रूप में, लंदन उच्च न्यायालय में आपका उपस्थित होना तथा उदगम, तारीख एवं इतिहास तथा मंदिर संस्कृतिसे जुडे अन्य मामलों को सिद्ध करना रहा है, जिससे भारत की जीत हुई और नटराज को वापस तमिलनाडु लाया जा सका। लंदन उच्च न्यायालय के ट्रायल जज ने अपने निर्णय में यह कहते हुए आपकीप्रशंसा की है कि "नागास्वामी, मैं आपके विषय में, आपकी अद्वितीय विशेषज्ञता से संतुष्ट हूँ।" अपील न्यायालय के तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों ने निचली अदालत के निर्णय के प्रति सहमति व्यक्त की और यह टिप्पणी की, कि डा. नागास्वामी, एक विशेषज्ञ पुरातत्वशास्त्री और सच्चे हिन्दू की अगुवाई में शैलीशास्त्रगत समानताओं को स्थापित करने हेतु पुख्ता प्रमाण विद्यमान हैं तथा न्यायमूर्ति इयान केनेडी ने न केवल विस्तारपूर्वक विश्लेषण एवं विचार किया अपितु अंतिम परिणाम में आपके मत को वरीयता दी। इस तरह के परिणाम अधिकतर अपील योग्य नहीं होते हैं।" महारानी के वकील, श्री एड्रियन हैमिल्टन ने लंदन के न्यायालय में प्रस्तुत अपने जवाब में यह उल्लेख किया था कि डा. नागास्वामी को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक पहलुओं और हिन्दू धर्म के बारे में अदभुत ज्ञान एवं अनुभव है।

5. आप रामजन्म भूमि/बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में उपस्थित हुए थे और यह प्रमाणित करते हुए न्यायालय में पूरे 26 दिन तक साक्ष्य प्रस्तुत किए और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संचालित खुदायी के आधार पर राम जन्म भूमिके दावे की पुष्टि करते हुए सिद्ध किया कि ढहाई गई बाबरी मस्जिद के नीचे निश्चित रूप से हिन्दू मंदिर विद्यमान था। आपने तमिलनाडु से चोरी हुए और आस्ट्रेलिया को तस्करी की गई नटराज की प्रतिमाओं का तुलनात्मक एवं माइक्रोस्कापिक परीक्षण संचालित किया और आईडोल विंग सी आई डी, तमिलनाडु पुलिस के अनुरोध पर पहचान-प्रमाण पत्र जारी किया, जिसने मामले को निर्णीत कराया और प्रतिमा की वापसी तथा ऑस्ट्रलिया के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भारत के माननीय प्रधानंत्री को सुपुर्द करने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया।

6. आपने 30 वर्ष पहले चिदम्बरम् में डा. कपिला वार्ष्णेयन के साथ आज के विश्व प्रसिद्ध नाट्यांजलि नृत्य उत्सव की भी व्यवस्था की थी। आपने स्वयं बारह से अधिक नृत्य नाटिकाओं की रचना की और कई देशों में प्रस्तुतियां दीं जैसे कि ब्रिटिश संग्रहालय लंदन तथा विश्व के कई अन्य भागों में अभिनव विधियों के माध्यम से आपने पुरातत्व के संदेश को राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया तथा आपको कांची के महास्वामी द्वारा 'शिला लेक्या तत्वज्ञ' की उपाधि से सम्मानित किया गया। तमिलनाडु स्थित सभी अग्रणी सांस्कृतिक संगठनों ने प्रशस्ति पत्रों के साथ आपको सम्मानित किया है। तमिलनाडु सरकारने आपको कलाईमामानी उपाधि प्रदान की है। एम ए एम चैरिटीज ने आपको एम. ए. चिदातनाम्ब्रम चेट्टियार पुरस्कार और एक लाख रूपए के नकद इनाम से पुरस्कृत किया। पोल्लाची वल्लाल एन. महालिंगम् ने आपको "शिलाय मित्ता चेम्माल" अर्थात् "नटराज को ढूंढ़कर लाने वाला" की पदवी प्रदान की। अन्य सम्मानों में, द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑव मुंबई द्वाराफेलो ऑव द बेंगाल आर्ट, फेलो ऑव द भारती संगम ऑव हस्टन, यू एस ए, तमिल संगम, कनाडा, भारती संगम,चैन्ने, मद्रास संस्कृत अकादमी,रामकृष्ण मिशन, तमिलनाडु पुरातत्व सोसायटी,साउथइंडियन न्यूमिस्मेटिक सोसायटी, सेक्किलार रिसर्च सेंटर, चेन्नै, सेक्लिाररिसर्च सेंटर, चिदम्बरम तथा पूज्य श्री दयानन्द सरस्वती के अर्स विद्या गुरू कुलम से प्राप्त सम्मान शामिल हैं।